परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ की ओर

जैनविश्वभारती परिसर में विविध कार्यक्रम

२० फरवरी। आज प्रातः जैनविश्वभारती परिसर में परिभ्रमण के दौरान पूज्य आचार्यप्रवर रोहिणी, शुभम् (गेस्ट हाउस), वर्द्धमान ग्रंथागार, सागर सदन, तुलसी अध्यात्म नीडम, अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र (निर्माणाधीन), जीवनविज्ञान भवन (निर्माणाधीन), भिक्षु निलयम, पंजाब भवन, युवालोक, आचार्य तुलसी स्मारक, अमृतायन आदि भवनों में पधारे। संबद्ध अधिकारियों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए अपने-अपने संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन का लोकार्पण

आज प्रातःकालीन प्रवचन से पूर्व श्रद्धेय आचार्यप्रवर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा निर्मित कालू कन्या महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन में पधारे। पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुनकर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन, आचार्य तुलसी महिला शिक्षा केन्द्र तथा आचार्य महाप्रज्ञ केन्द्रीय शिक्षा संस्थान का उद्घाटन क्रमशः श्री राजेन्द्र बच्छावत, श्रीमती कुमुद बच्छावत एवं श्रीमती मंगलीदेवी दुधोड़िया द्वारा किया गया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम पूज्यवर के मंगल मंत्रोच्चार से प्रारंभ हुआ। मुमुक्षु बहनों ने 'कालू अष्टकम' का संगान किया। महाविद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संवाद के माध्यम से छात्राओं ने महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों की अवगति दी। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चंडालिया ने महासभा द्वारा संचालित गतिविधियों की अवगति देते हुए कहा 'आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तीन भवनों के निर्माण का दायित्व महासभा को मिला था, जिसे महासभा ने निर्धारित अवधि में पूरा कर दिया। भविष्य में भी महासभा अपने दायित्व का निष्ठा और जागरूकता से निर्वाह करती रहेगी। जैनविश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने कहा 'विश्वविद्यालय अपने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सपनों को साकार करने हेतु पूर्णरूपेण कटिबद्ध है।'

इस अवसर पर कालू कन्या महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या साध्वी ऋतुयशाजी (पूर्व नाम समणी ऋतुप्रज्ञाजी), वर्तमान प्राचार्या समणी मल्लिप्रज्ञाजी, आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी एवं जैनविश्वभारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। भवन निर्माण में सहयोगी व्यक्तियों को महासभा द्वारा स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा 'ज्ञान भीतर का नेत्र है। नेत्र के विकास का सक्षम माध्यम शिक्षा केन्द्र बनते हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में लौकिक विद्या और अपराविद्या का प्राधान्य है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है, जब भौतिक ज्ञान विकसित करने वाली विद्याओं के साथ-साथ अध्यात्म विद्या और पराविद्या का भी समावेश हो। जैनविश्वभारती में संचालित विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में संस्कार-निर्माण प्रमुख लक्ष्य रहे।'

आज लोकार्पित तीन भवनों के साथ तीन आचार्यों के नाम जुड़े होने का उल्लेख करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा 'परम पूज्य आचार्य कालू, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा जगत को महान अवदान दिया है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय सुशिक्षित, संस्कारवान और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए संकल्पित व्यक्तित्वों के निर्माण में अपनी प्रमुख भूमिका निभाए।' कार्यक्रम का संचालन समणी सत्यप्रज्ञाजी ने किया।

मध्याह्न में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आरोग्यम एवं सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला में पधारे। जैनविश्वभारती के कुलपति एवं रसायनशाला के निदेशक श्री झूमरमलजी बैंगानी ने रसायनशाला के कर्मचारियों के साथ आचार्यप्रवर का स्वागत किया।

पूज्यप्रवर आज धर्मसंघ के सबसे प्राचीन सेवाकेन्द्र में पधारे। यहां आपने सेवादायी और सेवाग्रही साध्वियों की सारणा-वारणा की। वृद्ध साध्वियों ने आराध्य को अपने बीच पाकर बारम्बार अहोभाव व्यक्त करते हुए अभिवंदना की।

जैनविश्वभारती विश्वविद्यालय का छठां दीक्षान्त समारोह

२१ फरवरी। जैनविश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय का छठां दीक्षान्त समारोह अनुशास्ता पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में भव्यता एवं गरिमा के साथ आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि थे राजस्थान एवं पंजाब के राज्यपाल डॉ. शिवराज पाटिल। कार्यक्रम का प्रारंभ राष्ट्रगान से हुआ। विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने प्रार्थना प्रस्तुत की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलाधिपति श्री लालचन्द सिंघी ने कहा 'चयनित पाठ्यक्रम एवं आध्यात्मिक अनुशासन के कारण इस विश्वविद्यालय की अपनी एक विशिष्ट पहचान है।'

कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए कहा 'प्रथम जैन विश्वविद्यालय के रूप में संस्थापित यह विश्वविद्यालय आज अशान्त विश्व को शान्ति एवं अहिंसा का सन्देश दे रहा है।'

इस अवसर पर जैन दर्शन एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग की अध्यक्ष समणी ऋतुप्रज्ञाजी, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, अहिंसा एवं शान्ति विभाग के अध्यक्ष डॉ. बच्छराज दूगड़, जीवनविज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग विभाग के अध्यक्ष प्रो. सेल्वराज, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन, अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस. एल. परिथि ने अपने विभाग के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कुलाधिपति ने ३५ छात्र-छात्राओं को स्वर्णपदक तथा २३ विद्यार्थियों को पी.एचडी. की उपाधि प्रदान की। कुलपति द्वारा १८४८ छात्र-छात्राओं को स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधि प्रदान की गई।

विश्वविद्यालय द्वारा प्रख्यात विधिवेत्ता एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री अभिषेक मनु सिंघवी को डी.लॉज. की मानद उपाधि प्रदान की गई। श्री सिंघवी के सुपुत्र अनुभव सिंघवी ने यह उपाधि प्राप्त करते हुए उनके द्वारा लिखित स्वीकृति भाषण का वाचन किया।

दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल श्री शिवराज पाटिल ने अपने अभिभाषण में कहा 'यह विश्वविद्यालय देश का अनोखा विश्वविद्यालय है, जहां विद्यार्थियों को जीवननिर्माण की शिक्षा दी जाती है। अध्यात्म की शिक्षा के प्रमुख केन्द्र के रूप में इस विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा है। संस्कृति, अध्यात्म एवं धर्म की शिक्षा जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। इनकी शिक्षा आचरण और व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाती है। जैनविश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए समर्पित ऐसा विशिष्ट संस्थान है, जहां दी जाने वाली शिक्षा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करने में सक्षम है।'

दीक्षान्त समारोह में अनुशास्ता के रूप में अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा 'श्रुतसंपन्न बनने के लिए प्रमाद का परित्याग और सहिष्णुता का विकास आवश्यक है। अहिंसा की चेतना का विकास प्रत्येक व्यक्ति में होना चाहिए। हर व्यक्ति की यह आन्तरिक भावना हो कि मेरे द्वारा किसी का अहित न हो। शिक्षा की सार्थकता भी इसी भावना में निहित है। शिक्षित बनना जितना जरूरी है, उससे ज्यादा जरूरी है चरित्र संपन्न बनना। चरित्र की भित्ति पर ही जीवन की इमारत खड़ी होती है। यहां से प्राप्त शिक्षा और संस्कार आप लोगों के जीवन को ठोस धरातल देंगे।'

राजनीति में शुचिता का आह्वान करते हुए आचार्यवर ने कहा 'राजनीति भी मूल्यों से प्रेरित होनी चाहिए।' आचार्यवर ने विद्यार्थियों को आर्षवाणी के उच्चारण के साथ अनुशासन का संकल्प करवाया।

श्री अभिषेक मनु सिंघवी को विश्वविद्यालय द्वारा दी गई डी.लॉज. की उपाधि के संदर्भ में पूज्य आचार्यवर ने कहा 'अभिषेक मनु सिंघवी के पिता डॉ. एल.एम. सिंघवी सुविख्यात कानूनवेत्ता और साहित्य के अध्येता थे। पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ उनका निकट का सम्पर्क था। अभिषेक मनु सिंघवी भी कुशल प्रवक्ता हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के समय से ही हमारा उनसे सम्पर्क रहा है।'

समारोह की संपन्नता के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर और राज्यपाल श्री पाटिल के बीच श्रीमद्भगवद्गीता, संबोधि, राष्ट्रीय समस्याएं आदि विविध विषयों पर वार्तालाप हुआ।

लाडनूं प्रवास : उल्लेखनीय बिन्दु

- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आचार्य पद पर अभिषिक्त होने के बाद प्रथम बार लाडनूं, जैनविश्वभारती पधारे। विशाल जुलूस एवं भव्य स्वागत समारोह का दृश्य नयनाभिराम था। जनता का उत्साह दर्शनीय

था। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तीन विशाल भवनों का उद्घाटन समारोह एवं जैनविश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह भव्य एवं गरिमापूर्ण रहे।

- जापान के साकामोतो के नेतृत्व में अठारह सदस्यीय दल ने जैविभा में पूज्यवर के दर्शन किए। उन्हें प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोग कराए गए। प्रयोगों से सभी बहुत प्रभावित हुए।
- प्रेक्षा फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में तुलसी अध्यात्म नीडम् में प्रेक्षा प्रशिक्षकों की परीक्षा का आयोजन हुआ। फाउण्डेशन की गत मीटिंग में यह निर्णय हुआ था कि प्रशिक्षक परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही प्रशिक्षक के रूप में मान्यता मिल सकेगी। इस निर्णय के अनुसार ४५ प्रशिक्षकों ने परीक्षा दी।
- १९-२१ फरवरी को लाडनूं में पूज्य आचार्यवर के सान्निध्य में एवं मुनि सुखलालजी के निर्देशन में अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा एक त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में १४ प्रदेशों के १२७ शिक्षकों ने भाग लिया। सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि देशभर में नशामुक्ति का अभियान चलाया जाए तथा एक करोड़ छात्र एवं शिक्षकों से नशामुक्ति की हस्ताक्षरित स्वीकृति प्राप्त की जाए। लाडनूं से पूज्यवर के विहार के साथ ही इस महाअभियान का शुभारंभ हो गया।
- साधुत्व की दिशा में प्रस्थान करने को समुत्सुक भाई-बहनों के प्रशिक्षण का अपूर्व संस्थान है पारमार्थिक शिक्षण संस्था। आचार्यश्री तुलसी के साथ यात्रायित रहने वाली संस्था बाद में लाडनूं की सातवीं पट्टी में स्थित भूतोड़ियाजी की भूमि में निर्मित भवन में स्थापित हो गई। संस्था के लिए जैविभा परिसर में लगभग तेईस वर्ष पूर्व 'अमृतायन' के रूप में भवन का निर्माण होने के बावजूद संस्था भूतोड़िया भवन में ही स्थिर बनी रही। कुछ समय पूर्व संस्था नीडम् में स्थानान्तरित हो गई। पूज्यप्रवर के जैविभा प्रवास के दौरान पा. शिक्षण संस्था का अमृतायन में विधिवत् स्थानान्तरण हो गया।
- जैविभा मान्य विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में आचार्यवर ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी (सन २०१३-२०१४) के संदर्भ में लाडनूं तहसील को नशामुक्त बनाने का महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट प्रस्तुत करते हुए कहा 'एक समिति का गठन करके इस दिशा में काम किया जाना चाहिए।'
- लाडनूं में पूज्यप्रवर का तीन दिवसीय संक्षिप्त प्रवास होने पर भी कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, बेंगलोर, चेन्नई, अहमदाबाद, सूरत आदि सुदूर क्षेत्रों में प्रवासी लोग बड़ी संख्या में लाडनूं पहुंचे।
- इस प्रवास में जैनविश्वभारती, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद, अ.भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के पदाधिकारी और कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। पूरे प्रवास के दौरान जैविभा परिसर में उत्सव का-सा माहौल रहा। आचार्यवर द्वारा लाडनूं को 'तेरापंथ की राजधानी' के रूप में की गई विधिवत् घोषणा से पूरे देश में प्रवासित लाडनूं के लोगों में अतिशय उत्साह का संचार होना स्वाभाविक था। इस घोषणा से पूरे तेरापंथ समाज को गौरव की अनुभूति हुई।

लाडनूं से मंगल विहार

२२ फरवरी। आज प्रातः लाडनूं से विहार कर आचार्यप्रवर सेवाकेन्द्र और परम पूज्य डालगणी के समाधिस्थल पर पधारे। समाधिस्थल पर पूज्यप्रवर ने कुछ क्षण तक ध्यान किया। उसके बाद आचार्यप्रवर डॉ. बी.एस. घोड़ावत के अनुरोध पर उनके हॉस्पिटल में पधारे। उल्लेखनीय है डॉ. घोड़ावत इस क्षेत्र के लोकप्रिय चिकित्सक हैं। पूज्यप्रवर और साधु-साध्वियों की चिकित्सा बहुत मनोयोग से करते हैं और प्राप्त अवसर को अपना परम सौभाग्य मानते हैं।

लगभग १६ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'निम्बीजोधा' गांव पधारे। यहां आपका प्रवास नवीन विद्यापीठ में हुआ। बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों एवं यात्रा में साथ चल रहे लोगों को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा 'राग-द्वेष में जीने वाला बहिर्मुखी और अपने भीतर जीने वाला अंतर्मुखी होता है। हम राग-द्वेष को कृश करके अंतर्मुखी बनने की साधना करें। हमारे भीतर कषाय मंदता और निर्धारित आचार के प्रति निष्ठा का भाव पुष्ट होता रहे।' ग्रामवासियों को प्रतिबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा 'नशा व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है। स्वस्थ और तनावरहित जीवन जीने के लिए नशीले पदार्थों से बचें और अपने गांव को आदर्श गांव बनाने का प्रयास करें।'

२३ फरवरी। आज १४ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'रताऊ' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय

माध्यमिक विद्यालय में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्रोताओं को उद्‌बोधित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा 'धर्म वही कर सकता है जिसमें धर्म की चेतना जाग जाए। गृहस्थ अपने जीवन में संयम का अभ्यास करे। दुःखी व्यक्ति के लिए धर्म का चिंतन करना भी कठिन है। भूख, गरीबी, बेरोजगारी आदि हिंसा के बाहरी कारण हैं। आन्तरिक कारण है व्यक्ति का नकारात्मक चिंतन। इसके कारण व्यक्ति हिंसा और अपराध में चला जाता है। केवल बल प्रयोग उग्रवाद और आतंकवाद की समस्या का समाधान नहीं है। हिंसा और अशान्ति के उन्मूलन के लिए समाज व्यवस्था पर ध्यान देना होगा। अतिशय गरीबी व्यक्ति को हिंसा के लिए प्रेरित करती है और अतिशय अमीरी व्यक्ति को उन्माद में ले जाती है।'

विद्यार्थियों को प्रतिबोधित करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा 'अच्छे संस्कार विद्यार्थी में संवेग नियंत्रण की शक्ति और अनुशासन का भाव विकसित करते हैं। जीवन नशामुक्त हो और अनुकंपा का भाव विकसित हो तो कल्याण का पथ प्रशस्त हो सकता है।'

२४ फरवरी। लगभग ग्यारह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'खाम्याद' गांव में पधारे। वहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने कहा 'हर व्यक्ति सुख और शान्ति का जीवन जीना चाहता है, क्योंकि उसके बिना जीवन का कोई अर्थ और महत्त्व नहीं। सुख और शान्ति का उपाय है धर्म। जिसने धर्म के मर्म को समझ लिया और जिसके जीवन में धर्म का अवतरण हो गया, वह कभी दुःख और तनाव में नहीं जा सकता। त्याग, संयम की साधना और इच्छाओं के अल्पीकरण में वास्तविक सुख और शान्ति है।' प्रवचन से पूर्व साध्वी दीप्तियशाजी ने गीत का संगान करते हुए अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी शुभप्रभाजी ने किया।

२५ फरवरी। आज बारह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'बिचावा' पधारे। वहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन प्रवचन में पूज्य आचार्यवर ने कहा 'सत्य की साधना के लिए मध्यस्थ भाव आवश्यक है। सत्य के प्रति दृढ़ आस्था हो, दृष्टिकोण सम्यक् हो और नीति शुद्ध हो तो निर्णय यथार्थ हो सकता है। जीवन में कठिनाइयां आ सकती हैं। लेकिन विघ्न-बाधाओं और कठिनाइयों की स्थिति में भी धीर पुरुष सत्पथ से विचलित नहीं होते।'

रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी ग्रामीणों की अच्छी उपस्थिति रही। संतों ने गीत और भजन सुनाए। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में ग्रामीणों को व्यसनमुक्त जीवन जीने की अभिप्रेरणा दी।

मुस्लिम समुदाय के बीच

२६ फरवरी। प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने बिचावा से छोटीखाटू के लिए विहार किया। मार्गवर्ती 'शेरानी आबाद' गांव आया। यह मुस्लिम बहुल गांव है। गांव के सैकड़ों लोग अहिंसा यात्रा का स्वागत करने के लिए खड़े थे। बुजुर्ग और वरिष्ठ लोगों ने आचार्यवर का तहेदिल से इस्तकबाल किया। गांववासियों की ओर से मौलाना अब्दुल हकीम ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। पूज्य आचार्यप्रवर ने बड़ी संख्या में उपस्थित मुस्लिम बंधुओं को अहिंसा यात्रा के उद्‌देश्यों की अवगति देते हुए जीवन में अनुकंपा और नैतिकता का भाव विकसित करने तथा नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी।

छोटीखाटू में भव्य स्वागत

शेरानी आबाद गांव में मुस्लिम समाज के लोगों को संबोधित कर आचार्यवर छोटीखाटू की ओर प्रस्थित हुए। लगभग दस बजे पूज्यवर ने नगर में प्रवेश किया। दूर तक अगवानी में पहुंची लोगों की भीड़ ने शीघ्र ही जुलूस का रूप ले लिया। भव्य और व्यवस्थित जुलूस नगर के मुख्य मार्ग से होता हुआ तेरापंथ भवन में पहुंच कर सभा के रूप में परिवर्तित हो गया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा 'आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व खाटू नगर की सफाई की गई है। आवश्यकता इस बात की है कि बाहर की सफाई की तरह भीतर की भी सफाई हो। नशामुक्ति का प्रयास इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। यहां की अणुव्रत समिति सक्रिय है। वह आसपास के गांवों में भी अच्छा कार्य कर रही है। गांव में नैतिक मूल्यों के जागरण और नशामुक्ति का सघन

प्रयास किया जाए तो खाटू अणुव्रत गांव या आदर्श गांव के रूप में स्थापित हो सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'आत्मा से परमात्मा बनने की बात दुर्लभ है। परमात्मा की पूर्ण व्याख्या करना भी कठिन है। परमात्मा तर्कातीत है। उसे किसी उपमा से उपमित नहीं किया जा सकता। किसी बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न भी बड़ा करना होता है। साधना के शिखर पर पहुंचने के लिए वीतरागता की साधना बहुत जरूरी है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'मैं अनेक बार अनेक रूपों में छोटीखाटू आया हूं। इस बार भी अहिंसा यात्रा के साथ आया हूं। अहिंसा यात्रा का मुख्य उद्देश्य है जन-जन में अनुकंपा की चेतना का जागरण। सभी जीवों के प्रति प्रेम और दया का भाव जागे। व्यक्ति-व्यक्ति में सद्भावना और मैत्री भाव का विकास हो। जीवन में अनुकंपा का भाव पुष्ट हो तो अनेक समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाएं। अनुकंपा, दया और करुणा भाव का अभाव हो रहा है, इसीलिए भ्रूणहत्या जैसी बुराई विस्तार ले रही है। अनुकंपा की चेतना हो तो व्यक्ति किसी भी तरह का पाप कर्म करने से पहले कई बार सोचेगा।'

स्वागत कार्यक्रम रात्रि में आयोजित हुआ। स्थानीय लोगों ने परमाराध्य आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी।

२७ फरवरी। आज प्रातःकालीन प्रवचन में मंत्री मुनि सुमेरमलजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लोगों को आत्मदर्शी बनने की प्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में दशवैकालिक सूत्र के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा 'दशवैकालिक सूत्र में मुख्यतः साध्वाचार का वर्णन है। यह साधु के लिए तो उपयोगी है ही, गृहस्थ के लिए भी प्रेरणादायी बन सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'विगत अनेक वर्षों से मेरा प्रातःकालीन वक्तव्य आगमाधारित होता है। उसी शृंखला में आज दशवैकालिक पर आधारित प्रवचनमाला का प्रारंभ कर रहा हूं।' धर्म को उत्कृष्ट मंगल बताते हुए आचार्यवर ने कहा 'जिसका मन धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमन करते हैं। धर्म की साधना में संघीय साधना बहुत सहायक है। संघीय साधना के लिए पंचनिष्ठामृत को हम जीवन में उतारें। हमें आत्मोत्थान की दिशा में विकास करना है। मन में वैराग्य और संयम की चेतना पुष्ट हो, 'श्रमणोऽहं' की अभिप्रेरणा निरंतर बनी रहे। संवर की साधना में स्वयं को नियोजित करें।'

प्रवचन के पश्चात पूज्य आचार्यवर ने राजलदेसर में दिवंगत साध्वी सुमतिश्रीजी का संक्षिप्त परिचय देते हुए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ उनकी स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया। चौधरी प्रेमसिंहजी ने अणुव्रत के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

छोटीखाटू में आचार्यवर का दो दिवसीय प्रवास बहुत सफल और कार्यकारी रहा। इस अल्पकालिक प्रवास में चेन्नई, कटक, भुवनेश्वर, कोलकाता, दिल्ली, सूरत, मुम्बई आदि क्षेत्रों से प्रवासी बड़ी संख्या में पहुंचे और सेवा-उपासना का लाभ उठाया। लाडनूं, डीडवाना, बोरावड़ आदि समीपवर्ती क्षेत्रों के लोग भी बड़ी संख्या में छोटीखाटू पहुंचे। स्व. श्री रूपचन्दजी छोटीदेवी बरमेचा की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र जीवनमल, सुमेरचन्द, भीकमचन्द, धनेशकुमार बरमेचा के सौजन्य से साहित्य अर्धमूल्य में उपलब्ध रहा। साहित्यप्रेमियों ने इस छूट का पूरा लाभ उठाया।

२८ फरवरी। आज छोटीखाटू से आचार्यवर ने रानीगांव की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में मकराना तहसील की सीमा पर बोरावड़ के सैकड़ों लोगों ने अपने आराध्य का भावभीना स्वागत किया। रानीगांव में आचार्यवर का प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

आज पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की दसवीं मासिक पुण्यतिथि थी। साध्वी मुकुलयशाजी, साध्वी संगीतप्रभाजी ने गीत के माध्यम से अपनी भावांजलि अर्पित की। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जीवन के अनेक घटना-प्रसंगों का उल्लेख किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'मैं परम पूज्य आचार्यश्री के साथ वर्षों तक रहा। वे ज्ञान के उपासक थे। वे प्रवचन भी करते, किन्तु प्रयोग पर सर्वाधिक बल देते। नैतिकता शून्य धर्म को उन्होंने कभी महत्त्व नहीं दिया। धर्म को उन्होंने आचार और व्यवहार के साथ जोड़ा और समय-समय पर उसकी समीक्षा करते रहने की बात कही। अपने जीवन में उन्होंने प्रलंब यात्राएं की। हर वर्ग के लोगों से मिले, उनकी समस्याओं

का गहराई से अध्ययन किया और उनका आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया। वे चिरकाल तक लोगों के प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।' अहिंसा यात्रा की विशद अवगति देते हुए पूज्यप्रवर ने लोगों को नशामुक्त जीवन जीने की अभिप्रेरणा दी।

आचार्यवर ने प्रवचन के पश्चात पूर्व विधायक श्री भंवरलालजी राजपुरोहित ने आचार्यवर की अभिवंदना में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

१ मार्च। १० किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर मनानी गांव में पधारे। वहां आपका प्रवास स्थानीय विद्यालय में रहा। आज के दिन अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में कन्यामंडल की कन्याओं ने गीत प्रस्तुत किया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी, नागौर जिला यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष श्री चेतन डूडी, श्री प्रेमसिंहजी चौधरी, श्री भीखमचन्दजी नखत ने अणुव्रत के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। बोरावड़ से समागत मुनि पारसकुमारजी ने अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में दशवैकालिक सूत्र की विवेचना करते हुए कहा 'साधु भ्रमर के समान होता है। भ्रमर जैसे हर फूल से थोड़ा-थोड़ा रस ग्रहण करता है, साधु की वृत्ति भी वैसी ही होती है। साधु का तात्पर्य है समता की साधना करने वाला। वह महाव्रती होता है। महाव्रत की साधना सबके लिए संभव नहीं। मध्यम मार्ग है अणुव्रत। बारह व्रतों की अनुपालना करने वाला व्रती श्रावक होता है। व्रतों का जीवन में बहुत महत्त्व है। व्रतों को जीवन में धारण किया जाए तो धर्म स्वयं जीवन में उतर जाता है।'

अणुव्रत की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा 'छह दशक पूर्व आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। इसके लिए उन्होंने देश के विभिन्न भागों की पदयात्रा की। हर वर्ग के लोगों से व्यापक संपर्क किया और उन्हें नैतिक एवं प्रामाणिक बनने के लिए प्रेरित किया। आज अनेक संस्थाएं अणुव्रत अभियान को गतिशील बना रही हैं। जन कल्याण, समाज कल्याण और राष्ट्र कल्याण की भावना से चलाए जा रहे अणुव्रत अभियान को व्यापक समर्थन मिला है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'मुनि पारसजी हमारे धर्मसंघ के युवा तपस्वी संत हैं। तपस्या इनके लिए दाल-रोटी जैसी बात है। बाईस वर्ष तक ये शासन गौरव मुनिश्री बुद्धमल्लजी के साथ रहे। गतवर्ष इन्हें मुनिश्री मिलापचन्दजी की सेवा में भेजा गया। ये सेवा के अभ्यासी रहे हैं। सेवा और तपस्या के क्षेत्र में ये अपना विकास करते रहें।'

इच्छाओं का परिसीमन करें

२ मार्च। प्रातः १२.५ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर कालवा पहुंचे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। मध्यवर्ती 'मनानी' गांव के श्री सुरेश मंत्री एवं अन्य ग्रामवासियों के अनुरोध पर आचार्यवर ने कई घरों का स्पर्श किया।

कालवा में प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय सरपंच श्री रमेश बुगालिया एवं मकराना पंचायत समिति के सदस्य श्री भूराराम डूडी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'साधुत्व का पालन वही कर सकता है जो कामनाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। कामना से आक्रान्त व्यक्ति कदम-कदम पर विषाद को प्राप्त करता है। कामनाओं का अंत करने वाला व अपने आप में संतुष्ट रहने वाला स्थितप्रज्ञ होता है। कामना के दो प्रकार बताए गए हैं इच्छा काम और मदन काम। इन दोनों से उपरत रहने वाला साधु की कोटि में आता है। कामनाओं के आधार पर व्यक्ति की तीन कोटियां होती हैं महेच्छ, अल्पेच्छ एवं अनिच्छ। गृहस्थ अनिच्छ तो नहीं बन सकता, किन्तु अल्पेच्छ तो बन ही सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'भारत सद्‌भागी इसलिए है, क्योंकि यहां ज्ञानी, ध्यान और तपस्वी ऋषि-मुनि हुए हैं। उन्होंने स्वयं का कल्याण करते हुए परकल्याण का भी सलक्ष्य प्रयास किया। हम भी जन-जन के आत्मोत्थान व अनुकंपा की चेतना के विकास के लिए अहिंसा यात्रा के साथ परिभ्रमण कर रहे हैं।'

आज अपराह्न में मकराना के एस.डी.एम. श्री प्रमोद जैन ने आचार्यवर के दर्शन कर अनेक विषयों पर वार्तालाप किया।